ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 25, अंक 229 नवम्बर 2022

संविधान दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 25 अंक 229
नवम्बर 2022

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/9510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ. बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	03
2.	भारत में स्त्री-विमर्श के प्रेरणा -स्त्रोत गुरु नानक देवजी	डॉ. रविन्द्र गासो	04
3	सावित्रीबाई फुले का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान	-अंकित दयाल (शोधार्थी)	06
4	जे. कृष्णमूर्ति जी के नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन	दिलीप कुमार सिंह (शोधार्थी) शोध निदेशक - डॉ. नीतू तिवारी	09
5	नीरजा माधव के साहित्य में पर्यावरण संकट	सोनम चौरसिया (शोधार्थी)	11
6	गरियाबंद जिले के कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय के बालिकाओं समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन	डॉ. मुक्ता कान्हा कौशिक	14
7.	Nitrate in Groundwater The Nectar turned Noxious	Sh. Pawan Kumar (AP-Geography)	17
8.	Key Characteristics of Top Class Judokas	Mr. Shubham Pal	21
9.	देश के सर्वांगीण विकास में धर्म से अधिक महत्वपूर्ण शिक्षा है	बी.एल. परमार	26

UGC Care Listed Journal

खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

अपनी बात

भारत के संविधान निर्माताओं ने गहन चिंतन–मनन और विस्तृत विचार–विमर्श के पश्चात् ही भारत के लिये शासन के दर्शन और पद्धति को अंगीकार किया। संविधान के प्रारूप पर बोलते हुए बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने यह दावा किया था कि – ''यह व्यवहारिक है, यह लचीला है और यह शांतिकाल में ही नहीं युद्धकाल में भी देश को एकजुट रखने में पर्याप्त रूप से सक्षम है।

25 नवम्बर 1949 के संविधान का मसौदा स्वीकृति के लिए संविधान सभा के सामने पेश करते हुए डॉ. अम्बेडकर ने चेतावनी दी थी–''26 जनवरी 1950 को हम अर्न्तविरोधों के जीवन में प्रवेश कर रहे होंगे। हमारे यहाँ राजनीति में बराबरी होगी और सामाजिक–आर्थिक जीवन में असमानता होगी। राजनीति में हम एक व्यक्ति एक वोट और एक मूल्य के सिद्धांत को मान्यता दे रहे होंगे, लेकिन अपने सामाजिक–आर्थिक जीवन में हम अपने सामाजिक–आर्थिक ढ़ांचे के तर्क से एक व्यक्ति एक मूल्य के सिद्धांत को नकारते रहेंगे। हम कब तक अपने सामाजिक–आर्थिक जीवन में समानता को नकारते रह सकते हैं। अगर हम लम्बे समय तक उसे नकारते रहते हैं तो अपने राजनीतिक जनतंत्र को खतरे में डालकर ही ऐसा कर रहे होंगे। हमें इस अर्न्तविरोध को जल्द से जल्द समाप्त कर देना चाहिए वरना नाबराबरी (असमानता) को झेलने वाले, राजनीतिक जनतंत्र के उस ढ़ांचे को उखाड़ देंगे, जिसे इस संविधान सभा ने इतने श्रमपूर्वक गढ़ा है।''

वर्तमान परिदृश्य में हालात इतने चिंताजनक हो गए हैं कि यह चेतावनी इतने जोरों से सच होती लगती है कि इस पर शीघ्र ध्यान दिये बिना नहीं रहा जा सकता। सत्तारूढ़ पार्टियों को चाहिये कि संविधान के मूलाधारों को कमजोर करनेवाली नीतियों तथा संविधान में दी गई बुनियादी गारंटियों को कमजोर नहीं होने दे। इन गारंटियों को भारतीय जनता के लिए स्वतंत्रता, समानता तथा भ्रातृत्व के वादे और जाति, धर्म या लिंग के विभाजन से उठकर सभी नागरिकों के लिए समानता के वादे के रूप में सूत्रबद्ध किया जा सकता है। डॉ. अम्बेडकर ने संविधान द्वारा स्थापित ढ़ांचे और देश की सामाजिक, आर्थिक सच्चाईयों के बीच की असबद्धता की बात की थी।

हमारे संविधान के केन्द्र में यह मूल्य है कि अंततः संप्रभुता देश की जनता में निहित है। 'हम भारत के लोग' इस संप्रभुता का संसद के लिए अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से व्यवहार करते है। स्वयं संसद को इसकी जिम्मेदारी सौंपी गई है कि अपने प्रति सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करे। इस तरह जनता के प्रति कार्यपालिका (सरकार) की जवाबदेही, संसद के प्रति उसकी जवाबदेही के जरिए सुनिश्चित की जाती है, जबकि संसद के सदस्य स्वयं जनता के प्रति जवाबदेह होते है। जवाबदेही की यह श्रृंखला एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में संविधान के मूल में समाई हुई है। आज इस श्रृंखला को हर स्तर पर मजबूत करने की आवश्यकता है। चुनाव में जनतांत्रिक तरीके से चयन के जनता के अधिकार की रक्षा हो तथा साम्प्रदायिकता और जातिवाद की संकीर्ण भावना को उभरने नहीं दिया जाना समय की मांग है।

भारत में जातियाँ है और जातियाँ राष्ट्र विरोधी है। सब से पहले तो इसलिये क्योंकि ये सामाजिक जीवन में अलगाव लाती है। वे इसलिये भी राष्ट्र विरोधी है क्योंकि वे विभिन्न जातियों के बीच ईर्ष्या और द्वेष की भावना पैदा करती है। लेकिन अगर हम वास्तव में एक राष्ट्र बनना चाहते हैं तो हमें हर हाल में इन कठिनाईयों पर विजय पानी होगी। क्योंकि बंधुत्व तभी संभव है जब हम एक राष्ट्र हो, और बंधुत्व न हो तो समानता और स्वतंत्रता की औकात मूलम्में से ज्यादा कुछ नहीं होगी।

संविधान दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

जय भीम, जय संविधान।

– डॉ. तारा परमार

भारत में स्त्री–विमर्श के प्रेरणा–स्रोत गुरु नानक देव जी

– डॉ. रविन्द्र गासो

गुरु नानक देव जी (1469–1539 ई.) भारतीय साहित्य और संस्कृति के अतुलनीय युगस्रष्टा हैं। उनकी पहचान सिक्ख–पंथ के प्रर्वत्तक प्रथम गुरु और सन्त काव्यधारा के प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में है।

उनका धर्म–दर्शन रूढ़िवादी धर्म और परम्परा में क्रान्ति की सम्पूर्ण प्रस्तावना है। गुरु नानक देव जी सामाजिक क्रान्ति के बिना धार्मिक क्रान्ति को असम्भव मानते थे। 'जाति–वर्ण' की अवैज्ञानिकता पर गुरु नानक देव जी मौलिक सवाल करते हैं।

अपने **'भडि जंमीऐ भडि निमीऐ ...।'** वाले विश्व–प्रसिद्ध श्लोक में **'सो किउ मन्दा आखीऐ जितु जंमहि राजान'** का नवीन क्रान्तिकारी उद्घोष कर गुरु नानक देव जी ने मध्यकाल में जिस स्त्री–विमर्श की मौलिक शुरूआत की थी, उसका अभी तक भी हमारे अकादमिक–बौद्धिक क्षेत्र में वाजिब नोटिस नहीं लिया गया है।

इस श्लोक में **'स्त्री'** के लिए **'भडि'** शब्द का प्रयोग किया गया है। 'स्त्री' के लिए 'भंडि' शब्द उस समय रूढ़ था। 'भंड' शब्द का अर्थ है निंदा, मजाक। 'भंड' शब्द से ही 'भंडि' (स्त्री) शब्द बना है। पंजाबी के क्लासिकल विद्वान भाई काहन सिंह नाभा कृत पंजाबी भाषा में प्रकाशित विश्वकोश **'महान कोश'** भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, सातवीं बार 2006 के पृष्ठ 927 पर 'भंड' शब्द का अर्थ दर्ज है – मखौल करना, निर्लज्ज बातें करने वाला भांड, भांड–पात्र, बर्तन, स्त्री जो संतान उत्पन्न करने के लिए शुभ पात्र है।

पुरुष–प्रधान पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष द्वारा डांटी–डपटी, झिड़की जाती या उपहास का पात्र बताई जाने वाली या हमेशा भंडी जाने वाली स्त्री को 'भडि' शब्द से ही सम्बोधित किया जाने लगा था। शोषण का सांस्कृतिक अनुकूलन कैसे होता है, इस शब्द के माध्यम से सहज ही समझा जा सकता है। **श्रेष्ठ राजाओं को जन्म देने वाली स्त्री जाति** है – कहकर गुरु जी स्त्री के पक्ष में महान तर्क का निर्माण करते हैं। इस तर्क से भी आगे बढ़कर उनके वचन हैं कि **'स्त्री से मनुष्य का जन्म होता है, स्त्री के गर्भ में ही शरीर बनता है, स्त्री के साथ ही सगाई तथा विवाह होता है, स्त्री के सम्बन्ध से ही (ससुराल, मायका) सम्बन्धी बनते हैं।**

यह तथ्य और सत्य कौन सी सत्ता झुठला सकती है कि समाज और संस्कृति का अस्तित्व स्त्री पर आश्रित है।

गुरु नानक देव जी का तर्क है **'भंडहु चलै राहु'** अर्थात मनुष्य जाति और समाज की परम्परा स्त्री के आश्रय से ही चलती है। **'स्त्री से स्त्री पैदा होती है। स्त्री के बिना संसार में (प्रभु के बिना) कोई उत्पन्न नहीं हुआ।** गुरु जी का यह तर्क कि निरंकार प्रभु के गुण गाने वाले सभी भाग्यशाली हैं। ऐसे मुख कान्तिमान हैं। गुरु नानक देव जी ने **धर्म और भक्ति के क्षेत्र** में **स्त्री–पुरुष में कोई भेद नहीं किया है।**

महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि ये सब तर्क और अनुपम उद्भावनाएं जिस 'श्लोक में हैं, वह श्लोक गुरु नानक देव जी कृत **'आसा दी वार'** का अंग है। गुरु नानक देव ने कुल 974 पदों की रचना की है। उनकी समस्त वाणी संगीत के 19 रागों में सुसज्जित है।

स्त्री की भर्त्सना करना, निन्दा करना, उसे निकम्मा कहना या उस पर अनेक निर्योग्यताएँ थोपना आदि पुरुष–प्रधान पितृसत्तात्मक विचारधारा के कुकृत्य हैं। गुरु नानक देव जी अपने इस सर्वाधिक लोकप्रिय शब्द में स्त्री–विरोधी विचारधारा को लम्बे हाथों लेते हैं। इस श्लोक की विद्वानों द्वारा की गई व्याख्या बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। अकादमिक और साहित्यिक क्षेत्रों को इस तथ्य से अवगत होना बहत ही आवश्यक है ताकि स्त्री–विमर्श को भारत के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से जोड़ा

जा सके।

भंडि जमीऐ भंडि निमीऐ भंडि मंगणु वीआहु।
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु।
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु।
सो किउ मन्दा आखीऐ जितु जंमहि राजान।
भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ।
नानक भंडै बाहरा ऐको सचा सोइ।
जितु मुखि सदा सालाहिऐ भागा रती चारि।
नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि।

अर्थात् – स्त्री से मनुष्य का जन्म होता है, स्त्री के गर्भ में ही शरीर बनता है, स्त्री के साथ ही सगाई तथा विवाह होता है। स्त्री के सम्बन्ध से ही (ससुराल, मायका) सम्बन्धी बनते हैं। स्त्री से उत्पत्ति का क्रम चलता है। यदि एक स्त्री मर जाए तो दूसरी स्त्री की तलाश की जाती है। स्त्री के आश्रय से ही समाज की स्थापना होती है। वह स्त्री क्यों बुरी कही जाए जिससे राजा लोग जन्म लेते हैं। स्त्री से सृष्टि उत्पन्न होती है। संसार में कोई जीव स्त्री के बिना उत्पन्न नहीं हुआ। (नानक) केवल एक सत्य प्रभु ही है जो स्त्री से उत्पन्न नहीं हुआ। (चाहे पुरुप हो, चाहे स्त्री) जिस मुख से सदा प्रभु के गुण गाए जाते हैं उस पर भाग्य की मणि है, उसका भाग्य अच्छा होता है। (नानक) उस सत्य प्रभु के घर वे मुख ही कान्तिमान होते हैं। (डॉ. तारन सिंह, गुरु नानक वाणी प्रकाश (भाग पहला) हिन्दी में, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, प्रथम संस्करण 1986, पृ. 598)

डॉ. रत्न सिंह जग्गी का कथन है – 'मध्य युग में एकमात्र साधक गुरु नानक देव जी हैं, जिन्होंने इस सामाजिक कुवृत्ति का कठोरतापूर्वक खण्डन किया और अकाट्य तर्कों द्वारा सामाजिक जीवन में नारी के स्थान और महत्त्व की स्थापना की। ('आसा दी वार' दा टीका, पंजाबी युनिवर्सिटी पटियाला, 2009, पृ. 23)

गुरु नानक देव जी 'गिआन' की तलवार से स्त्री को अंधविश्वासों के बंधनों से मुक्त किया। उनकी समूची वाणी स्त्री और अन्ततः या समग्रतः मानव–मुक्ति की संकल्पना प्रस्तावित करती है।

उन्होंने कर्मकाण्डी, अकर्मण्य, मांगकर खाने वालों की तुलना में एक गृहस्थ को उत्तम बताया।

'किरत (काम, श्रम) करो, वंड छको (बांट कर खाओ), नाम जपो' का सिद्धान्त गृहस्थ और धर्म में एकत्व का व्यवहारिक चिरस्थाई विलक्षण मॉडल है। संगति और पंगत (पंक्ति) की प्रथा और **लंगर** की अवधारणा धर्म और समाज के अन्योन्याश्रित परस्पर सह–अस्तित्व के मॉडल को सशक्त, सुदृढ़ बनाने में सहायक हैं।

'यज्ञोपवीत' और 'सूतक' जैसी अनेक कुप्रथाओं व अंधविश्वासों को गुरु नानक देव जी व्यर्थ बताते हैं। वे 'जाति–वर्ण' व्यवस्था को निराधार मानते हैं। उन्होंने ऊँच–नीच को बेमानी माना और समाज के सबसे निम्न कहे जाने वाली जाति और वर्ग का साथ दिया। स्त्री के पक्ष में उनकी विचारधारा सामाजिक समता के वृहद परिप्रेक्ष्य से जुड़ी है। समाज में समता स्थापित होने से स्त्री को भी वास्तविक समानता का दर्जा मिलना सुदृढ़ होता है अन्यथा ऐसी समानता कोरा भ्रम है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में 'वर्ण–व्यवस्था' पुरुप–प्रधान पितृसत्तात्मक वर्चस्व स्थापित करने के लिए विकसित हुई थी। गुरु नानक देव जी के दर्शन में 'जाति–वर्ण' का कोई महत्त्व नहीं। उनका मानना है जब प्रभु का कोई 'जाति–वर्ण' नहीं तो उसके भक्तों का कोई वर्ण–वर्ग नहीं हो सकता। इस तरह से गुरु नानक देव जी भारत में 'स्त्री–विमर्श' की वैचारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बनाते हैं।

एसोसिएट प्रोफेसर,
अध्यक्ष, हिन्दी–विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज,
पूण्डरी (कैथल) (डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी,
चित्र गुप्ता रोड, नई दिल्ली द्वारा संचालित,
हरियाणा सरकार द्वारा सहायता प्राप्त व कुरुक्षेत्र
विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र से सम्बद्ध कॉलेज)
मोबा. 9416110679

सावित्रीबाई फुले का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान : अंकित दयाल

– अंकित दयाल (शोधार्थी)

सारांश–आधुनिक भारत के इतिहास में जब भी स्त्री शिक्षा की चर्चा होगी तो सावित्रीबाई फुले के योगदान के बिना इसकी सार्थकता को हासिल नहीं किया जा सकता। 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिले के नयनगांव में जन्मी सावित्रीबाई फुले माली जाति से तालुकात रखती थी। इन्होंने सामाजिक रीति रिवाज एवं कुरीतियों से ऊपर उठकर स्त्री शिक्षा का अलग पूरे भारत में जगाया। अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर 1848 में इन्होंने पुणे में भारत का प्रथम बालिका विद्यालय खोला तथा भारतीय इतिहास की प्रथम भारतीय महिला शिक्षिका बनने का गौरव हासिल किया। शिक्षा का प्रसार करने के दौरान इन्हें कई संघर्ष का सामना करना पड़ा लेकिन इनके अटल और दृढ़ व्यक्तित्व ने इसे रुकावट नहीं बनने दिया उन्होंने दर्जनों स्कूल खोले, विधवाओं के रहने हेतु आश्रम खोला साहित्य के क्षेत्र में कई काव्य रचनाओं को गढ़ा। 19वीं सदी के सामाजिक आंदोलन के प्रणेता के रूप में इन्हें हमेशा याद किया जाता है इनके द्वारा संचालित की गई साक्षरता की दीप से आज पूरा भारत का कोना–कोना रोशन हो रहा है।

मुख्य शब्द – शिक्षा, सामाजिक आंदोलन, स्त्री, स्कूल, शिक्षिका, आश्रम, कविता, पाठ्यक्रम, छात्र, कुरीतियां।

प्रस्तावना –उन्नीसवीं सदी का दौर देश के सामाजिक आंदोलन के रूप में देखा जाता है इसी दौर में कुछ ऐसे महान समाज सुधारक हुए जिन्होंने देश को एक नई दिशा देने का काम किया इस शताब्दी में एक महान समाज सुधारक शिक्षाविद एवं भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले का जन्म हुआ। जिन्होंने जाति प्रथा तथा पुरुष प्रधान समाज को चुनौती देते हुए देश में शिक्षा का अलख जगाया।

सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिले के नयन गांव में हुआ था यह माली जाति से तालुकात रखती थी जो परंपरागत रूप से फूल से संबंधित व्यवसायों में संलग्न रहते थे 9 वर्ष की उम्र में इनका विवाह 13 वर्षीय ज्योति राव फूले से हुआ ज्योतिराव फुले जिनके बिना आधुनिक भारत के सामाजिक सुधार की कल्पना अधूरी है, ने इन्हें आगे की पढ़ाई हेतु प्रेरित किया जब इनका विवाह हुआ था तो इनका अक्षर ज्ञान से भी सरोकार नहीं था परंतु उनके पति उस समय तीसरी कक्षा में पढ़ते थे इन्हीं की मदद से उन्होंने अपनी शुरुआती पढ़ाई की आगे चलकर इन्होंने शिक्षिका बनने हेतु अपना प्रशिक्षण दो जगहों से प्राप्त किया पहला संस्थान अमेरिकी मिशनरी सिंधिया फर्राट द्वारा संचालित अहमदनगर में स्थित था वहीं दूसरा पुणे में स्थित था। भारत की प्रथम महिला शिक्षिका तथा प्रधानाध्यापिका बनने की नींव यही पड़ी । शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने इसे प्रसार करने हेतु सोचा और इसे जन–जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया । वस्तुतः 19 वीं सदी का यह दौर समाज में व्याप्त कई कुरुतियाँ एवं इसके सुधार हेतु प्रयास के द्वंद से गुजर रहा था । इस दौर में जहां सती प्रथा और भ्रूण हत्या जैसी प्रथा विद्यमान थी जिसके कारण शिक्षा प्राप्त करना बहुत दूर की बात हुआ करती थी। जब बदलाव की पहल सावित्रीबाई फुले ने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर किया तो इन्हें अपनी जाति समूह के साथ–साथ समाज के अन्य वर्गों के द्वारा भी विरोध का सामना करना पड़ा उस दौर में स्त्री शिक्षा कल्पना मात्र थी ।

स्त्री शिक्षा पर पहल करने पर उत्पन्न चुनौतियों

का जिक्र ज्योतिबा फुले ने 15 सितंबर 1853 को ज्ञानोदय को दिए साक्षात्कार में इसका जिक्र किया है उन्होंने कहा कि "मेरे साथ ऐसा हुआ कि मां के कारण बच्चों में जो सुधार आता है वह बहुत महत्वपूर्ण व अच्छा होता है इसलिए जो लोग इस देश में खुशहाली और कल्याण की चिंता करते हैं उन्हें महिलाओं की स्थिति पर ध्यान देना चाहिए और देश को आगे बढ़ाना है तो उन्हें ज्ञान देने का हर संभव प्रयास करना चाहिए इस विचार के साथ मैंने सबसे पहले लड़कियों के लिए स्कूल शुरू किया लेकिन मेरे स्वर्ण भाइयों को यह पसंद नहीं आया कि मैं लड़कियों को पढ़ाता हूं और मेरे ही पिता ने हमें घर से निकाल दिया" पिता के द्वारा घर से निकाले जाने के बाद सावित्रीबाई अपने पति के साथ उनके एक सहयोगी उस्मान भोख के यहां शरण ली । संघर्ष की वास्तविक शुरुआत विद्यालय खोलने को लेकर हुआ क्योंकि इन्हें कोई भी अपनी जमीन देने को तैयार नहीं था ना ही इनके पास इतने पैसे थे अंततः अथक प्रयास के बाद उन्होंने 14 जनवरी 1848 को पुणे के भिड़े वाड़ा में लड़कियों के लिए भारत का पहला स्कूल खोला। संघर्ष की स्थिति यह थी कि उस अंधेरे युग में ज्ञान का दीप जलाना कइयो को मंजूर नहीं हुआ स्कूल जाने के दौरान इन्हें हर रोज उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था रूढ़िवादी पुरुष इन पर भद्दे कमेंट करते थे इनके ऊपर पत्थर, कीचड़ और गोबर तक फेंके जाते थे इसीलिए यह विद्यालय जाने के दौरान एक अतिरिक्त साड़ी भी रख लिया करती थी ।

अपने लक्ष्य के प्रति जुनून रखने वाली सावित्रीबाई ने बहुत ही ढ़ता के साथ अपने कार्यों में लगी रही उन्होंने स्वयं ही प्रथम बार 9 विभिन्न जातियों के बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। उस दौर में कोई लड़कियों को स्कूल नहीं भेजता था पर इनका प्रयास अंततः रंग लाया और अगले एक साल में यह संख्या बढ़कर 25 एवं 1850 तक यह संख्या बढ़कर 70 तक पहुंच आगे चलकर उनके इस संघर्ष को बेहतर परिणाम प्राप्त हुए और धीरे–धीरे इन्होंने अन्य जगहों पर भी स्कूल खोलने की परंपरा को आगे बढ़ाया और दर्जनों स्कूल पुणे के विभिन्न जगहों पर खोले गए।

सावित्रीबाई फुले यद्यपि लड़कियों हेतु स्कूल खोलने की परंपरा की शुरुआत आज से लगभग 174 वर्ष पूर्व किया था परंतु उस दौर में भी इनके पढ़ाने की शैली में नवाचार का समावेश था। इन्होंने सर्वप्रथम पाठ्यक्रम को अधिक रोचक बनाया इस हेतु उन्होंने विषय वस्तु को समझाने हेतु लघु तथा रोचक कथाओं को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया अपनी खुद की कविता सुना कर विषयों को और रुचिकर बनाया। छात्राओं के लिए खेल सत्र का आयोजन भी किया जिससे वह शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रह सके।

पाठ्यक्रम के साथ–साथ इन्होंने कई ऐसे कार्य किए जिसकी झलक वर्तमान में मध्यान्ह योजना तथा शिक्षा के अधिकार के रूप में देखने को मिलता है। इन्होंने उस दौर में छात्रों को स्कूल आने हेतु प्रेरित करने के लिए वजीफा जैसे कार्यक्रम चलाए। इन्होंने नियमित अंतराल पर माता–पिता के साथ बैठकर सत्र आयोजित की जिससे अभिभावक को भी शिक्षा के प्रति गंभीरता से अवगत कराया जा सके इन्होंने बच्चों के स्वास्थ्य को भी खासा ध्यान दिया जिससे वह बेहतर तरीके से पढ़ाई कर सकें इन्होंने छात्रों को पुस्तकालय से भी अवगत कराया जिससे वह बेहतर वातावरण में पढ़ सकें।

सावित्रीबाई फुले ने ज्योतिराव फूलों के साथ मिलकर 18 स्कूल खोलें उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 1852 में महिला सेवा मंडल खोला। इनका कार्य केवल शिक्षा तक ही सीमित नहीं था इन्होंने विधवा विवाह, जाति प्रथा एवं बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों पर भी हमला बोला। बलात्कार पीड़ितों की देखभाल के लिए आश्रय

तक स्थापित किए। उस दौर में विधवाओं के दुर्दशा का भी एहसास किया गया जिसके तहत विधवा महिलाओं को अक्सर पुरुषों के द्वारा यौन शोषण किया जाता था और गर्भनिरोधक उपायों की कमी के कारण वे गर्भवती हो जाती थी। इस उपाय हेतु इन्होंने 'बाल हत्या प्रतिबंधक गृह' नामक आश्रम खोला जिसमें कई महिलाओं को सहारा मिला। सावित्रीबाई फुले की अपनी कोई संतान नहीं थी इसीलिए इन्होंने एक ब्राह्मण बच्चे को गोद लिया तथा उसे शिक्षित बनाया।

सावित्रीबाई फुले ने व्यवहारिक तौर पर यह महसूस किया कि गरीबी और पिछड़ेपन का मुख्य कारण शिक्षा ही है जिस प्रकार भोजन, वस्त्र और मकान व्यक्ति हेतु आवश्यक है उसी तरह चौथे स्तंभ के रूप में शिक्षा की भूमिका है। मानव के सर्वागीण विकास हेतु यह नितांत आवश्यक है। उन्होंने शिक्षा हेतु जाति, धर्म, लिंग एवं बंधन रहित पहुंच हेतु वकालत की और यह बताया कि एक आदर्श समाज के निर्माण के केंद्र में शिक्षा ही है।

आधुनिक भारत के इतिहास में भारत की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले का योगदान अविस्मरणीय है, उन्होंने उस दौर में शिक्षा का दीप समाज में जलाया जब महिला की साक्षरता लगभग शून्य प्रतिशत थी। आज लगभग 175 वर्ष के बाद भारत की महिला साक्षरता 64 प्रतिशत (2011 की जनगणना के अनुसार) से अधिक है जिसकी नींव सावित्रीबाई फुले ने डाली थी। आज लैंगिक समानता महिला का पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने से साकार हो रही हैं सपने की शुरुआत इन्होंने ही की थी। देश इनके योगदान को कभी नहीं भूला सकता और आने वाली पीढ़ी के लिए यह हमेशा एक महान समाज सेविका के तौर पर हमेशा याद की जाएंगी जो शताब्दियों में विरले ही होते हैं।

- Ankit Dayal
Research Scholar
Lalit Narayan Mitila University
Darbhanga, Vill.+P.O.- Saraiya
Via-Silout, P.S.-Sakra, Dist.-Muzaffarpur
(Bihar) 843119, Mob. 9625648045

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

(1) Prasar Bharati Bharat ek Khoj episode-45
https://youtu.be/tAWOpkC3nhs
(2) Google arts and culture
https://artsandculture.google.com/story/mAWBW6eHcTWSLg?hl=hi
(3) Savitribai phule
https://map.sahapedia.org/article/Savitribai-Phule/6248
(4) Savitribai Phule: The mother of modern education
https://velivada.com/2015/12/13/savitribai-phule-the-mother-of-modern-education
(5) The life and times of Dhyanjoti Kiranjoyti Savitribai Phule
https://feminisminindia.com/2016/09/05/essay-life-savitribai-phule
(6) Savitribai phule
https://m.timesofindia.com/topic/savitribai-phule
(7) जिया लाल आर्या– क्रांति ज्योति सावित्रीबाई फूले, वाणि प्रकाशन, 2018, पृ. 1–140
(8) संगीता मुलैय–सावित्रीबाई फूले और मैं–पैथर्स प्रकाशन, 2010 पृ. 1–114

जे. कृष्णमूर्ति जी के नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन

शोध निदेशक – डॉ. नीतू तिवारी **– दिलीप कुमार सिंह (शोधार्थी)**

शिक्षा में हमारे आचरण से ही मूल्यों की सकारात्मकता दिखलाई देनी चाहिए। हम अच्छा सोचोगें, अच्छा करेगें, अच्छे लोगों के संग रहेगें विचारों का संयत चित रहेगा तभी हमारे मूल्य प्रतिबिम्बित होगें। मूल्य प्राप्त करने में विनम्रता आवश्यक है। कृष्णमूर्ति जी के विचारों में आधुनिक विचार और विश्व नैतिकता को बनाये रखने के लिए मूल्य, संस्कार और शांन्ति आवश्यक है।

पृष्ठभूमि

शिक्षा जीवन को परिमार्जित करने की एक कला है जो मानव को पशुवत् व्यवहार से सभ्य मानव बनाने की ओर अग्रसित करती है। इसमें मानव अपने आप को समायोजित कर के मानवीय गुण विकसित करता है। इससे समाज और राष्ट्र विकसित होता चला जाता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पूरा विश्व भूमण्डलीयकरण के दौर से गुजर रहा है। पूरा जनमानस बाजारीकरण से ओत प्रोत होने के कगार पर है, इसमें जो व्यक्ति अपने को जोड़ नहीं पाया वह विकसित सभ्य समाज में पिछडा हुआ महसूस कर रहा है। इसमें बालक, युवा, प्रौढ और वृद्धजन था यूं कहे परिवार का प्रत्येक व्यक्ति पर इसका असर दिखाई दे रहा है। इस परिवेश में शैक्षिक मूल्य सामाजिक मूल्य, नैतिक मूल्य को बिना अपनाए शांति की कल्पना कैसे कि जा सकती है।

शिक्षा मानव उन्नति का मूल साधन है यदि उन्नति अपने सही दिशा में दिखाई दे। शांति और नैतिक मूल्य बनाए रखने के लिए हमें सकारात्मक रूप से कार्य करना है। और हमने मूल्य को विकसित करना होगा। "सबका भला सब अपना भला'' था हम सुधरेगें तो जग सुधरेगा की संकल्पना को विकसित करना है। शान्ति में नैतिकता अहम भूमिका है और नैतिकता है वहां मूल्य है इन मूल्यों को विकसित करने के लिए खास तौर पर बच्चों और नौजवानों को प्राकृतिक के अनुसार सकारात्मक कार्य भी देना होगा। शांति और नैतिक मूल्य विकसित करने के लिए 'व्यस्तता में मस्तता' दिखाना होगा। आज के शैक्षिक परिवेश में विद्यार्थियों में अच्छे मानवीय मूल्यों को आत्मसात कराना और उनका आदर्श रूप में अच्छे परिणाम दिखाकर प्रोत्साहित करना होगा।

शांति और नैतिक मूल्य के साथ सकारात्मक दृष्टिकोण शांति मूल्य और कौशल का मानव जगत् तथा प्रकृति के सामंजस्य बिठाने का कार्य भी करती है। इसमें व्यक्तिगत विकास हेतु आवश्यक प्यार, उल्लास, उम्मीद और हिम्मत के लिए आवश्यक है कि विकास की प्रक्रिया आगे बढाने के सभी प्रकृति में सामंजस्य बिठाकर ही शांति मूल्य की संकल्पना विकसित की जा सकती है।

इस लेख में शांति और नैतिक मूल्य उल्लेख विभिन्न सोपानों को ध्यान में रखकर उल्लेख किया गया है।

शोध की आवश्यकता

जे. कृष्णमूर्ति जी ने कहा है कि सीखने के लिए नैतिकता जरूरी है। हर मानव अपने आप में नैतिक बनता है यह पूरा विश्वास उसके धर्म ने सिखाए है जो जाने अनजाने में करता है। आप कहते है कि धर्म का सार पावनता है, जिसका न तो धार्मिक संगठनों से कुछ लेना देना है, न ही उस मान से जो विश्वास में धर्म नीति में फंसा और संस्कारित है।

जे. कृष्णमूर्ति जी कहते है कि यदि आप एक तूफान के बाद नदी के किनारे बैठे हो तो आप देखते है कि जलधारा ढेर सारा मलवा बहाकर ले जा रही है। उसी प्रकार आपको अपनी हर गतिविधि को आगे बढाने में आप सफल रहेगें। जे. कृष्णमूर्ति जी के विचारों में निहित नैतिक मूल्य की प्रासंगिकता की आवश्यकता महसूस की गयी।

समस्या कथन

'जे. कृष्णमूर्ति के विचारों में नैतिक मूल्य की प्रासंगिकता।'

शोध के उद्देश्य

जे. कृष्णमूर्ति के विचारों में नैतिक मूल्य की प्रासंगिकता।

शोध विधि

दार्शनिक एवं ऐतिहासिक अनुसंधान विधि प्रयोग में ली गयी है।

जे. कृष्णमूर्ति के विचारों में नैतिक मूल्य की प्रासंगिकता।

जे. कृष्णमूर्ति जी कहते है प्रकृति ही नैतिकता है प्रकृति मैदान में स्थित एक अकेला वृक्ष है, घास का मैदान है, पेडों का समूह है। प्रकृति नदी है, कोई एक नदी नहीं–वह गंगा नदी भी हो सकती है टेम्स भी और मिसीसिपी भी।

प्रकृति के अनेक रूप दिखाई पडती है प्रकृति स्वच्छ, पवित्र विकृति विहीन दिखलाई पड़ती है। इसमें सुंदरता स्पष्ट दिखाई पड़ती है जो स्वच्छन्द वातावरण को विकृति देने का कार्य मनुष्य का नीजी स्वार्थ दिखलाई पडती है प्रकृति क्या है? हमारे आस–पास प्रकृति, पशु, पक्षी व्हेल और डॉलफिन को बचाने की बहुत बातें होती है। प्रदूषित नदियों, झीलों और मैदानों को साफ करने की बातें की जाती है। प्रकृति इन सब का समुच्चय नहीं है, अक्सर समझ लिया करते है हम धर्म को भी इस तरह का अच्छाइयों का समुच्चय मान बैठते है। जैसा कि अक्सर समझ लिया जाता है, भ्रामक और पाखण्ड है। प्रकृति बाघ है– वह असाधारण पशु है, जो अपनी उर्जा शक्ति के कारण जाना जाता है। प्रकृति मैदान में स्थित एक अकेला वृक्ष है, प्रकृति घास का मैदान है, पेडों का समूह है, प्रकृति पेड की डाल में छिपती हुई एक गिलहरी है। चींटी, मधुमक्खी और अन्य जीव की प्रकृति है। प्रकृति में नदी की नैतिकता हो सकती है। मानव चाहे इसे किसी रूप में समझे। लोगों में इस प्रकृति को समझने और सराहने का भाव होना चाहिए। उनमें यह समझ, यह प्रतिबद्धता होनी चाहिए कि वे अपनी खुशी अपने हित और अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति को नष्ट या खत्म नहीं करेंगे। अपने भोजन के लिए वनस्पतियों का भी विनाश करते है। लेकिन अपने अस्तित्व के लिए तो हमें यह करना होगा। अगर हम अनाज, सब्जियां और फल नहीं खाएंगे तो फिर जीवित कैसे रहेंगे? प्रकृति और नैतिकता हमारे जीवन का हिस्सा है। वह हमसे अलग नहीं है। हमें जीवित रखने में बीज और मिट्टी की भी बहुत भूमिका है। दरअसल हम तेजी से यह भूलते जा रहे हैं कि प्रकृति में मौजूद दूसरे जीवों की तरह हम भी जीव है। क्या आपमें किसी पेड के प्रति आकर्षण का भाव है? पेड के सौदर्य को निहार पाने की दृष्टि होनी चाहिए। उसकी ध्वनि सुन पाने की श्रवण क्षमता और संवेदना, नैतिकता होनी चाहिए। हममे किसी भी छोटे पौधे, कही भी उग आए जंगली पेड, दीवारों पर डठती लताओं, पेड के पत्तों पर चमकती रोशनी और छायाओं को देखने सराहने का भाव होना चाहिए। प्रकृति की नैतिकता के कई भाव दिखलाई देते है। शहरों और महानगरों पेड–पौधे तुलनात्मक रूप से कम हो सकते है पर वे दुर्लभ नहीं है। पडोस के बगीचे का रख–रखाव ठीक नहीं भी हो सकता है वहां जंगली पौधे उग गए हो सकते है लेकिन वहं खिलते फूल भी उतने ही सुंदर होते है। अगर हम उन फूलों को एक संवेदनाशील व्यक्ति के नजरिये से देखे, तो पाइंगे की उन फूलों के साथ हमारा अस्तित्व भी जुडा है।

प्रकृति नैतिकता का नुकसान पहुंचाकर हम खुद को ही नुकसान पहुंचा रहे होते है। इस तरह की बातें पहले भी अलग–अलग तरीके से कही गयी है। लेकिन हम इन पर ध्यान नहीं देते है। इसकी वजह यह है कि अपनी समस्याओं, अपनी इच्छाओं, अपनी खुशियों और अपने दुख तक ही हम इतने केन्द्रित हो चुके है कि प्रकृति और उसकी सुंदरता हमें दिखालाई ही नहीं देती। अगर चांद की बात की जाए तो, अपनी आंखों,

अपने कान और सुंघने की क्षमता को एकाग्र कर चांद देखना होगा। चांद को इस तरह देखना होगा, जैसे उसे हम पहली बार देख रहे है। तभी जाकर अपनी माता–पिता, भाई–बहन और शिक्षकों को पहली बार देखने की दृष्टि पैदा होगी।

शोध की परिसीमाएँ

1. यह शोध कार्य जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों में नैतिक मूल्य तक सीमित है।

2. यह शोध कार्य प्राथमिक स्त्रोत एवं द्वितीयक स्त्रोत रचित पुस्तकों तथा कृष्णमूर्ति पर अन्य लेखकों द्वारा लिखी गयी पुस्तकों पर आधारित है।

शोध निष्कर्ष

समाज में फैली नैतिकता हास न हो जे. कृष्णमूर्ति जी शैक्षिक विचारों का सहायक सिद्ध होना परम आवश्यक है। शैक्षिक परिवेश में शांन्ति एवं नैतिक मूल्य को बनाए रखने में सहायक सिद्ध होगें।

शोध निर्देशिका – डॉ. नीतू तिवारी
सहायक आचार्या शिक्षा विभाग, जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ.प्र.)
शोधकर्ता – दिलीप कुमार सिंह
शिक्षा विभाग जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, (उ.प्र.)
मोबा. 9598445854

संदर्भः–

1. अमर उजालाः (21.02.2021) जे0 कृष्णमूर्ति, पेड पर छिपती गिलहरी भी प्रकृति है। दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला।
2. कृष्णमूर्ति जे भाग–2 शिक्षाओं का अन्वेषण, 2020 अनुवादक अचलेश चन्द्र और पद्मनाभन कृष्ण, वाराणसी कृष्णमूर्ति फाउन्डेशन उंडिया राजथार वाराणसी, 22100
3. कृष्णमूर्ति जे (2012), सत्य एक पथहीन भूमि है, वाराणसी, कृष्णमूर्ति फाउडेशन इंडिया, राजघाट कोर्ड वाराणसी– 22100
4. कृष्णमूर्ति जे0 (2008), शिक्षा क्या है, दिल्ली, 1590, मदरसा रोड कश्मीरी गेट दिल्ली– 110006

नीरजा माधव के साहित्य में पर्यावरण संकट

– सोनम चौरसिया (शोधार्थी)

आजकल हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श चर्चा के केंद्र में हैं। प्रत्येक दशक में एक नया आंदोलन समाज तथा विश्व कल्याण के पक्ष में शुरू हो जाता है। तो हमारा साहित्य उससे अछूता कैसे रह सकता है। वर्तमान समय में पर्यावरण संकट ने हमारा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। मेरे आलेख का केंद्र बिंदु कथाकार 'नीरजा माधव के साहित्य में पर्यावरण संकट' है। मनुष्य जीवन स्वच्छ पर्यावरण पर आश्रित है। पृथ्वी पर अनेकों जीव–जंतु, पेड़–पौधे, घटक तथा जैविक अवघटक तत्व विद्यमान है। इन तत्वों की पारिस्थितिकी श्रृंखला है, जिसने पर्यावरण में सामंजस्य स्थापित किया है। आज वह श्रृंखला खंडित हो रही है, इसी कारण पर्यावरण संतुलन भी स्खलित होता सापेक्षिक दिख रहा है। तकनीकी विकास ने मानव जीवन को अनगिनत भौतिक सुख सुविधाएं प्रदान की हैं, जिसके कारण विज्ञान को ही मनुष्य वरदान मानने लगा। विज्ञान की खोज द्वारा निर्मित वस्तुओं में अपनी उपलब्धि की विजय मानकर दिन प्रतिदिन विकास की सीढ़ियां चढ़ता गया । लेकिन जहां विज्ञान एक ओर मनुष्य के लिए वरदान सिद्ध हुआ वहीं दूसरी ओर वह अभिशाप के रूप में भी उभरकर सामने आया। वायुमंडल में धीरे–धीरे विषैली गैसों का फैलाव हो रहा है। जिसके कारण तापमान भी बढ़ रहा है तथा 'ग्लोबल वार्मिंग' की भयावहता भी चिंता का विषय है। क्लोरो– फ्लोरो गैस के कारण पृथ्वी की ओजोन परत में छिद्र होने के कारण सूर्य की पराबैंगनी किरणें धरती पर प्रवेश करने लगी है। जिसका परिणाम है आज कैंसर जैसी अनेकों बीमारियों ने मनुष्य को ग्रसित किया है। डॉ. श्याम निर्गम का कथन है, 'पृथ्वी पर प्राकृतिक संसाधनों का वितरण असतत एवं अनियमित है, जिसका आकलन प्राप्त करने की क्षमता और तकनीकी योग्यता पर निर्भर करता है बढ़ती जनसंख्या के कारण प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से प्राकृतिक संसाधनों के भण्डार तीव्र गति से

कम होते जा रहे हैं जिसके कारण पर्यावरण न केवल विकृत हो रहा है, बल्कि मानव जाति का अस्तित्व ही खतरे में पड़ता जा रहा है।[1] 'मनुष्य ने प्रकृति के साथ ही नहीं वरन् वनीय जीव–जंतुओं के साथ भी अमानवीय व्यवहार करते हुए उनसे उनके घर छीने हैं। आज न जाने कितनी प्रजातियां लुप्त हो गई है, उनके नाम और चित्र भी मात्र इतिहास के पन्नों में अंकित होकर रह गए हैं। गांव के गांव शहर की भेंट चढ़ चुके हैं।

भारत एक ऐसा कृषि प्रधान देश है जहां अधिकतर लोग खेती का कार्य करके अपना जीवन यापन करते हैं। निर्यात की दृष्टि से भी खाद्यान्न का अपना महत्व है। गांव के शहरीकरण से भविष्य में खाद्यान्न की समस्या की पूर्ति की आशंका को नीरजा माधव ने कथा में प्रस्तुत किया है। ताकि कहानी में मरद सिंह कहता है, 'सब यही सोचने लगे तो शहर में भी एक–एक दाने के लिए तरस जाएंगे लोग। पहले से ही पूरा गांव खाली हो चुका है चार अक्षर जिस ने पढ़ लिया वही नौकरियां वाला बाबू बनने का सपना लिए मुंबई कलकत्ता की राह पकड़ रहा है।'[2] आज की युवा पीढ़ी कृषि कार्यों को अनदेखा कर शहर की ओर भाग रही है। मनुष्य शहरी जीवन को अपनी उन्नति का आधार मानते हैं। नीरजा माधव देनपा तिब्बत की डायरी' उपन्यास में कहती हैं कि "चीनी सैनिकों ने इस तरह के वृक्षों की कटाई के लिए हजारों लकड़हारों को लगाया था पास ही लकड़ी चीरने की फैक्ट्री लगाई गई थी और काटी हुई बहुमूल्य लकड़ी अच्छे दामों में निर्यात कर दी जाती है।''[3] विभिन्न प्रकार के फर्नीचर तथा अन्य वस्तुओं के निर्माण में लकड़ियों का भारी मात्रा में आयात–निर्यात किया जाता है। चीन अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने हेतु वृक्षों की बहुमूल्य लकड़ियों से धन कमाना चाहता है। लकड़ियों के उत्तम व्यापार के कारणों से भी वृक्ष कट रहे हैं और जंगल खत्म हो रहे हैं। सामाजिक दृष्टि से भी देखे तो आज भी पर्यावरण को लेकर लोगों में जागरूकता का अभाव दिखाई देता है। डॉ. विबा कुमारी का वक्तव्य है, 'मनुष्य विज्ञान तथा विकास के नाम पर प्रकृति का लगातार विनाश पता चाह रहे प्रकृति का अमर्यादित उपभोग वनों की कटाई उद्योग धंधों की भरमार उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन व्यापार और बाजार और इसी प्रकार का एक परिवेश बनता जा रहा है जो प्रकृति पर्यावरण पृथ्वी और मानव जाति के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहा है।'[4] मनुष्य की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति ने उत्पादन पर अधिक जोर दिया है। इन उत्पादनों की पूर्ति हेतु विभिन्न राष्ट्रीय, अन्तराष्ट्रीय कंपनियों की स्थापना की जाती है। वर्तमान समय में जनसंख्या विस्फोट पर्यावरण प्रदूषण की वजह बना है।

यदि जनसंख्या को नियंत्रण में नहीं गया किया तो भविष्य में मनुष्य जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा तथा जिसके फलस्वरूप संसाधनों का प्रयोग आवश्यकता से अधिक होगा। नीरजा माधव का 'देनपा तिब्बत की डायरी' उपन्यास में वक्तव्य हैं, 'चीन का भी अहंकार कुछ पैसा है उसे अहंकार है अपनी जनसंख्या पर उसे अहंकार है अपनी मजबूत अर्थव्यवस्था पर उसे अहंकार है अपनी तकनीकी विकास पर।[5] चीन ने अपना वर्चस्व स्थापित करने हेतु विश्व स्तर पर निजी सीमा सुरक्षा हेतु नई–नई मिसाइलों परमाणु परीक्षण हो रहे हैं। यह परीक्षण कहीं न कहीं पर्यावरण को दूषित करने के लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं। उपन्यास 'देनपा तिब्बत की डायरी' में तिब्बत का एक नागरिक कहता है, जंगलों का विनाश होने और सीमेंट कारखानों में अत्यधिक कोयला जलाने से उत्सर्जित विषैली गैसों के कारण इस क्षेत्र में कभी–कभी तेजाबी बारिश भी होने की आशंका उसने जताई आज जगह–जगह लगे कारखाने फैक्ट्रियों से निकलने वाला धुआं वायु प्रदूषण का मुख्य कारण बना है।[6] औद्योगिकरण ने कारखानों तथा फैक्ट्रियों को विकसित किया है। इनसे निकलने वाला विषैला धुआँ वायुमंडल में पहुंचकर वायु प्रदूषण का कारण बना है। इसके साथ ही यातायात के अनेक साधन भी प्रदूषण लिए उत्तरदायी हैं। डॉ. प्रीति अग्रवाल का विचार है, मनुष्य ने विज्ञान की उन्नति के कारण विभिन्न प्रकार के वाहनों मशीन आदि का हिसाब किया परंतु इसके कारण चारों तरफ प्रदूषण बढ़ता जा रहा है इसके कारण ओजोन परत में छेद हो गया है इससे मानव जाति को धरती पर खतरा है।[7] वायु प्रदूषण के साथ जल प्रदूषण में भी फैक्ट्रियों से निकलने वाला जहरीला पदार्थ नालों

से निकलकर नदियों तथा अन्य जल स्रोतों को दूषित करता है। इन फैक्ट्रियों के आस–पास झोपड़ियों बनाकर रहने वाले लोग बदबू और गंदगी को भोगने के लिए विवश है। 'मिथकवध' कहानी का उदाहरण है "झुग्गियों के ठीक पीछे बहता है एक गटर। शहर भर की गंदगी को अपने चौड़े पाइप वाले गले में उबकाई की तरफ भरे इन्हीं झुग्गियों के पीछे उगल साफ करता है। गटर से कुछ दूर पीछे हरहराकर बहते समुद्र में अक्सर रोज रात में ही ज्वार आता है और गटर के पानी और बदबू के साथ ही साथ सारे मच्छर भी झुग्गियों को पार करते हुए सड़क के उस पार की चालों और फ्लैट में भी भर जाते हैं।[8] आगे नीरजा माधव ने अपनी कविता "प्यार लौटना चाहेगा" एक चिड़िया की वेदना को प्रस्तुत किया है।

'चिड़िया समझ नहीं पाती
क्या बचा उसका अपना
पेड़ कट जाने के बाद
जो केवल एक पेड़ नहीं
मां था, प्राण था, श्वास था, आकाश था।'[9]

चिड़िया के माध्यम से लेखिका ने मानव जाति के समक्ष सवाल उठाया है क्यों उसने अपने विलासिता और जीवन और सुख समृद्धि के लिए प्रकृति से उसका सौंदर्य और पशु–पक्षियों से उनका घर छीन लिया है। मनुष्य अपना घर बनाने के लिए पशु –पक्षियों के घरों को उजाड़ रहा है। नीरजा माधव समाज के सामने आदर्श जीवन शैली को अपनाने के लिए पौराणिक कथा को माध्यम बनाकर यह राम कौन है। निबंध में राम कथा के द्वारा राम के आदर्श जीवन तथा स्वच्छ पर्यावरण को समाज में स्थापित करने की सही दिशा देने का प्रयत्न किया है। जहाँ राम वह है जिन्होंने आदर्श जीवन और समाज कल्याण के लिए राजकीय सुखों का त्याग किया तथा वनवासी जीवन स्वीकार किया है। वही दूसरी तरफ रावण ने सभी सूर्य, चन्द्र, ग्रह को अपने नियंत्रण में कर अपने लिए सोने की लंका का निर्माण किया। रावण प्राकृतिक संसाधनों का अवांछनीय दोहन कर सृष्टि का संतुलन को बिगाड़ने वाला राक्षस है। लेखिका ने मनुष्यों से आदर्श जीवन हेतु विलासिता को त्याग कर संसाधनों का सही तरीके से उपयोग में लाने और रावण रुपी प्रदूषण का विनाश करने की बात की है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि लेखिका नीरजा माधव ने पर्यावरण संकट की समस्या को गहराई के साथ प्रस्तुत किया है। वरन समाज के सभी लोगों को सोचने और समझने के लिए विवश किया है कि पर्यावरण स्वच्छता उनका अपना दायित्व है। यही नहीं प्रत्येक राष्ट्रीय नागरिक का कर्तव्य है कि वह समाज और राष्ट्र हित के लिए पर्यावरण प्रदूषण को कम करने में अपना योगदान प्रदान करें।

शोधार्थी का नाम– सोनम चौरसिया
शोध निर्देशिका– डॉ. रत्ना शर्मा
असोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,हिंदी विभाग
गुरु नानक खालसा कालेज, मुंबई–400019
मोबा. 8574714244

संदर्भः–

1. पर्यावरण विमर्श– इंद्रनाथ सिंह/डॉ. बृजेश सिंह,भावना प्रकाशन दिल्ली–110091, प्रथम संस्करण–2012, पृ. 418
2. ताकि (आदिम गंध तथा अन्य कहानियां)–नीरजा माधव, संजय बुक सेंटर, गोलघर वाराणसी, प्रथम संस्करण 2002, पृ.18
3. वही, पृ. वही।
4. International Journal Of Humanities And Social Science Invention October 2018, पृ. 69
5. देनपा तिब्बत की डायरी–नीरजा माधव, प्रभात प्रकाशन,आसफ अली रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2018 पृ. 180
6. वही,पृ. 181
7. International Journal Multidisplinary Education And research 4 April 2020 पृ. 21
8. मिथकवध (पथदंश), नीरजा माधव,ज्ञानपीठ प्रकाशन, 18, इंस्ट्रीटयूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली, संस्करण 2003, पृ. 27
9. प्यार लौटना चाहेगा–नीरजा माधव, नेशनल पब्लिशिंग, 2/35 अंसारी रोड, दरियागंज,नई दिल्ली, संस्करण–2013, पृ. 48

गरियाबंद जिले के कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय के बालिकाओं समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

– डॉ. मुक्ता कान्हा कौशिक

सारांश – मानव जीवन की सुन्दरता व लक्ष्यपूर्ति में जिन संसाधनों की आवश्यकता है उनमें शिक्षा महत्वपूर्ण है। शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। मानव जो कुछ भी सीखता है, करता है और अनुभव प्राप्त करता है, ये सभी शिक्षा के अंतर्गत आता है। शिक्षा मनुष्य के साथ जन्म से लेकर मृत्यु तक साथ निभाती है।

भूमिका – मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है, मनुष्य की रचना कुछ इस प्रकार है कि उसे इस संसार में अपने आपको व्यवस्थित करने की आवश्यकता पड़ती हैं। इस प्रकार व्यवस्थापन में उसे अपने चारों ओर की परिस्थितियों का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करना जरूरी होता हैं। ऐसी दशा में वह अपनी आनुवांशिक देयों की सहायता से सीखता, जानता और अनुभव प्राप्त करता हैं शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, इस प्रक्रिया का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना उसे एक आदर्श नागरिक बनाना होता है।

समस्या का चयन – गरियाबंद जिले के कस्तूरबा गांधी उच्च माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

कस्तूरबा गांधी विद्यालय – कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की स्थापना सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत 2004 में की गयी। इसका उद्देश्य विषम परिस्थितियों में जीवनयापन करने वाले गरीब बालिकाओं को गुणवत्तायुक्त शिक्षा कराना था।

विद्यार्थी – प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों से तात्पर्य गरियाबंद जिले के कस्तूरबा बालिका उच्च, माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों से है।

अध्ययन की परिसीमन :– परिसीमा का तात्पर्य समस्या व उसके अध्ययन के व्यापक क्षेत्र को सीमित करना। शिक्षा व ज्ञान की सीमा अत्यंत ही विस्तृत एवं व्यापक है किसी भी समस्या का व्यापक या समग्र रूप में अध्ययन नहीं किया जा सकता, व्यापक क्षेत्र में अध्ययन असंभव नहीं पर कठिन अवश्य है। व्यापक क्षेत्र में अध्ययन करने में समय अधिक लगता है। साथ ही साथ विधि खर्चीली भी है इन दोनों से बचने के लिए समस्या के क्षेत्र को सीमित कर दिया जाता है। समय व साधन को ध्यान में रखते हुए इस शोध कार्य हेतु परिसीमाएं निर्धारित की गई ताकि अल्प समय में विश्वसनीय अध्ययन पूर्ण किया जा सके।

अध्ययन का उद्देश्य :– उद्देश्यों के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है जो अपने लक्ष्य या मंजिल को नहीं जानता है और बालक उस पतवार विहीन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी किनारे पर जा लगेगी।

किसी भी कार्य को आरंभ करते समय उसके उद्देश्य निर्धारित करना आवश्यक है उद्देश्यों के अभाव में उस कार्य की सफलता में संदेह किया जा सकता है। अतः किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने हेतु यह आवश्यक है कि इसके उद्देश्यों को पहले से ही निर्धारित कर लिया जाता है। कोई भी कार्य उद्देश्य विहीन नहीं होता है। हम किसी भी कार्य कोई न कोई उद्देश्य लेकर ही पूर्ण करते है। उद्देश्यविहीन कार्य का कोई निश्चित मार्ग नहीं होता है। और निश्चित मार्ग के बिना मंजिल तक पहुंचना संभव नहीं है।

अध्ययन की परिकल्पना :– अनुसंधान कार्य में समस्या चयन के उपरांत एक उपर्युक्त परिकल्पना की रचना की आवश्यकता होती है। सामान्य शब्दों में परिकल्पना का मुख्य अर्थ होता है 'पूर्व चिन्तन'। यह अनुसंधान में एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है। यह अनुसंधान

का द्वितीय सोपान माना जाता है। इसमें परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया जाता है। इसमें वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रायः सभी क्रियाओं का नियोजन परिकल्पनाओं की प्रमाणिकता के लिए किया जाता है। इसके अंतर्गत समस्या के समाधान तथा प्रश्नों के उत्तर ज्ञात करने का प्रयास प्रायः परोक्ष रूप से होता है।

शोध विधि – यादृच्छिक विधि :

वर्तमान समय में किसी तथ्य को ज्ञान करने के लिए सभी विज्ञानों तथा वर्गों के लोग सर्वेक्षण की सहायता लेते है। यह प्राचीन पद्धति है फिर भी वर्तमान में अपना महत्व रखता है। जैसे आर्थिक सर्वेक्षण, सामाजिक सर्वेक्षण तथा आपराधिक सर्वेक्षण इत्यादि। ये सर्वेक्षण वर्तमान समस्या कि प्रारूप के समाधान के लिए विस्तृत समंक प्रदान करते है जिनके आधार पर ही समस्या के समाधान का मार्ग विचार किया जाता है।

न्यादर्श :– व्यावहारिक तथा सामाजिक विषयों के शोध कार्यों में न्यादर्श का विशेष महत्व होता है। न्यादर्श एक महत्वपूर्ण अनुसंधानिक घटक है इसके अभाव में कोई भी अनुसंधान कार्य पूर्ण नहीं हो सकता। जनसंख्या की सभी इकाईयों का अध्ययन न तो वांछनीय है और न संभंव ही अतः मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष में प्रायः न्यादर्श की आवश्यकता होती है।

उपकरण :– प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान कार्य में आंकड़ों के संकलन के लिए बहुत से साधनों की आवश्यकता होती है। इन्हीं साधना को उपकरण कहा जाता है। अनुसंधान प्रकम में समस्या के निश्चित उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं की पुष्टि हेतु आंकड़ों का संकलन करने के लिए परिकल्पनाओं की प्रकृति के अनुरूप उपकरणों का चयन किया जाता है।

अध्ययन की जनसंख्या :– शोध का अंतिम लक्ष्य ऐसे सिद्धांतों व नियमों का सामान्यीकरण करना जो किसी व्यक्तियों, घटनाओं या वस्तुओं के समूहों पर लागू होती है। परन्तु ऐसे सिद्धांतों के विकास के लिए समूह के प्रत्येक सदस्य का अध्ययन करना संभव नहीं होता है ना ही आवश्यकता होती है कि विशेषकर उस स्थिति में जब समूह के सदस्यों की संख्या बहुत अधिक है।

परिकल्पना का निष्कर्ष –

सारणी कमांक –4.1

विद्यार्थियों के समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान,प्रमाणिक विचलन व टी–मूल्य का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	t-values
1.	समायोजन	25	29.08	5.19	45.7627
2.	शैक्षिक उपलब्धि	25	83.24	2.85	
स्वतंत्र अंश df=48, t=45.7627					

सारणी कमांक –4.2

विद्यार्थियों के समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान,प्रमाणिक विचलन व टी–मूल्य का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	t-values
1.	समायोजन	25	30.2	5.76	40.2987
2.	शैक्षिक उपलब्धि	25	82.24	2.92	
स्वतंत्र अंश df=48, t=40.2987					

सारणी कमांक –4.3

विद्यार्थियों के समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान,प्रमाणिक विचलन व टी–मूल्य का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	t-value
1.	समायोजन	25	20.84	8.24	34.4328
2.	शैक्षिक उपलब्धि	25	79.88	2.35	
स्वतंत्र अंश df=48, t=34.4328,					

सारणी कमांक –4.4

विद्यार्थियों के समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान,प्रमाणिक विचलन व टी–मूल्य का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	t-values
1.	समायोजन	25	24.08	7.65	34.3632
2.	शैक्षिक उपलब्धि	25	79.56	2.57	
स्वतंत्र अंश df=48, t=34.3632,					

निष्कर्ष – कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सुझाव – समायोजन क्षमता मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्ति है ये उस पर निर्भर करता है कि यह वातावरण के अनुकूल अपने व्यवहार में समायोजन क्षमता कितना लाता है।

विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता को बढ़ाने हेतु शिक्षकों को और आगे आने की जरूरत है।

1. मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को शिक्षण प्रक्रिया में प्राथमिकता देना।

2. विद्यार्थियों को वाद–विवाद, विचार–विमर्श विचार–अभिव्यक्ति, भाषण प्रतियोगिता, काव्यपाठ सम्मेलन, पत्र–लेखन, डायरी लेखन व गद्य–पद्य रचना लेखन आदि को प्रोत्साहित करने वाले कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए।

3. एन.सी.सी. व स्काउट गाइड, तथा ट्रेकिंग, सांस्कृतिक–प्रतियोगिता, जनसंपर्क कार्यक्रम जैसे कार्यक्रम विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता को प्रोत्साहित करता है। प्रत्येक परिस्थितियों में सबल व सजग बनने में सहायक होता है।

– डॉ. मुक्ता कान्हा कौशिक
(सहायक प्राध्यापक)
ग्रेसियस कॉलेज ऑफ एजुकेशन
वेलभाटा, अभनपुर, रायपुर–492001 (छ.ग.)
मोबा. 8435773335

संदर्भः–

1. आस्थाना, विपिन (1997) : प्रारंभिक सांख्यिकीय विधियाँ, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृ. 4

2. अग्निहोत्री आर. (1986) : 'सामान्य मानसिक योग्यता और माध्यमिक स्तर पर अध्ययन।'

3. आहूजा मलविन्दर (2006) : 'इम्पेक्ट ऑफ पैरेंटल इनवालमेंट एण्ड सोशियों इकोनॉमिक स्टेटस ऑफ द फैमिली ऑन एकेडमिक अचीवमेंट 'रिसेंट रिसर्चेज इन एजुकेशन एण्ड साइकोलॉजी, वाल्यूम–02, नं. 3–4

4. कुमार सुनिल एवं शर्मा, कुमार (2009) : 'एजुकेशन स्परेशन एण्ड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ सीनियर सेकेण्डरी स्टूडेंट्स, पटना।

5. वी वर्ड (1977) : बौद्धिक घर का माहौल और शैक्षणिक उपलब्धि काले, सफेद।

Nitrate in Groundwater The Nectar turned Noxious

- Sh. Pawan Kumar (AP-Geography)

ABSTRACT.

A CGWB report tells us that if the nitrate content in groundwater is confirmed to be more than 45 mg, then that water is marked as toxic water category. There are many such states and district within India whose level of toxicity in groundwater has reached its peak.

Water has its own high economic value and social importance in various forms. In ancient times, it was not an exaggeration from any point of view to call groundwater nectar. But in the present time man has become so ambitious that in lieu of fulfilling his needs for his economic benefit, he has brought groundwater into the category of poisonous water. Groundwater exists on our earth as a natural invaluable resource. For the purpose of increasing the yield, excessive amount of fertilizers, chemical fertilizers, insecticides, urea, DAP used in agricultural work have badly polluted the ground water. The concentration level of nitrate in groundwater has increased tremendously, due to which people in many districts of India have longing for a drop of clean and pure water.

Keywords : Nitrate, Blue baby syndrome, Hemoglobin, Methaemoglobin, Chemical fertilizers, Eutrophication, Ecosystem, Nitrate leaching, Reverse Osmosis, Environmental degradation, Waste management.

Research Methodology :

The Research Methodology of this Research paper is based on various Published national and international journals, various research magazine and published research article.

Introduction

All the civilizations all over the world flourished and sprouted around the river valleys. Water was the main reason for the germination of all civilizations because water is the basic reason for the survival of human life. Despite this, in modern times, indiscriminate exploitation and pollution of water in the race of development has brought not only the surface water, rivers, lakes, ponds but also the ground water, on the steps of destruction.

If the amount of nitrate in groundwater is confirmed to be more than 45 mg, then that water is marked as toxic water (1). There are many such states and districts within India whose level of toxicity in groundwater has reached its peak. The human body has to face many diseases due to the consumption of polluted water. From children to adults, the chances of getting a terrible disease increase manifold. We can see the blue baby syndrome disease as a major example in

children. Many researches tell us that if groundwater contaminate due to nitrates, then it is almost impossible to purify it.

In the year 2000, there was nitrogen pollution at 1549 sites in 267 districts of 17 states of the country, which in 2018 increased to19 states and 2352 sites. (2) This increase was estimated at 52 percent. According to the figures, this increase has been due to the excessive use of chemical fertilizers in agriculture.

According to a 2017 report by the Indian Nitrogen Assessment, the situation in Haryana is the most dangerous in the country where the level of nitrogen in groundwater has reached 100 mg, while the World Health Organization (WHO) has set a maximum limit of 50 mg of nitrate in potable water. (3)

Responsible factors :

To increase agricultural production in India, chemical fertilizers are used in large quantities, in which pesticides, along with urea, DAP, fertilizers manufactured in laboratories are the main ones. During agricultural work, all these seep from the top surface of the soil and get into the ground water, after which chemical reaction in the ground water starts less to contaminate the ground water. (4) There are many sites in India where for the people getting potable water on their own land is equivalent to finding water on the moon. The reason for this deadly pollution of ground water is the use of chemicals in agricultural practice as well as the leakage of dirty toxic water from the top surface of the soil from the dumping sites of garbage to the lower layers of ground water.

A paper "Predicting Regional Scale Elevated Ground Water Nitrate Contamination Risk Using Machine Learning of Natural and Human Induced Factors" provides information on how and through which sources nitrate can reach groundwater. Non-availability, poor maintenance of sewage treatment plant and poor septic system is also a reason. (5)

Negative effects of nitrates :

Human health

If there is an excess of nitrate in drinking water, then its effect on human health is negative. Especially babies under six months of age who can suffer serious illness from consuming water containing nitrates. If the concentration of nitrate in water exceeds 10 mg/1, it indicates excessive nitrate contamination in groundwater. (6) Blue baby syndrome in infants is a fatal disease in which the level of oxygen in the blood increases, inside it hemoglobin gets converted into methemoglobin, due to which hemoglobin is not able to supply oxygen in the blood, the colour of the skin turned blue and infants die.(7)

Environmental effect :

The use of excessive chemicals has turned the groundwater into a poison. The level of nitrate has increased so much, which

has negative effects on human health as well as on the environment. It has been observed theef eutrophication has occurred due to excess of nitrate, rapid reduction in the growth of aquatic plants and algae has been assessed. Along with land pollution, there has been a huge increase in aquatic pollution. The ocean ecosystem has been disturbed, with harmful effects on the health of almost every living organism in the water. Millions of aquatic organisms die every year due to water contaminated with nitrate, due to continuous leakage of nitrate into groundwater and the environmental quality is deteriorate rapidly.

Procedures to control and reduce nitrate pollution.

Prevention method : Nitrate leaching inside any area in which chemicals especially nitrate leak from the top surface of the soil to the lower layers of the soil. One of the most necessary measures to limit or reduce the level of nitrate contamination in these areas is to reduce the use of nitrogen in that area, by farmers using organic fertilizers instead of chemicals to increase their agricultural yields.

Formulation and formulation of appropriate policies :

The Government of India should also make some policies from time to time and decisive and analysis which should play a decisive role in removing the pollution of nitrate to groundwater. Rules should be set for different factories, how they will dispose of the waste materials and what are the methods and technology they have used to dispose of the waste and leftover waste. So the rate of environment degradation could be minimized.

Sewage system management :

In order to reduce environmental pollution, how to treat the waste water before discharge due to which there is no reduction in the quality of ground water all these things should be taken care of. Waste materials also a major cause factor of environmental destruction, so their treatment needs special attention. To identify areas where sewage poses major environmental and health hazards, to provide adequate training to the people and to ensure that adequate sewage treatment facilities are available to the local administration in that area should also be taken into account.

Reverse osmosis :

The reverse osmosis technique also known as R.O. It is known as the best technique of water purification. This technique is used to separate salinity (salt) from water. In reverse osmosis technology, water is passed through several impermeable membranes. This membrane separates suspended solids, which are 3-6 nanometers in size, from water. Microbes are also separated by the membrane which are harmful to the body. (8)

Extremely high levels of nitrate-nitrogen (more than 110 mg/l) can be removed up to 90% using this technique. Although reverse osmosis can be a nitrate remover suitable for the removal of toxic substances present in water in including fluoride, fertilizer and pesticide residues and heavy metals. This method is relatively expensive. (9)

Conclusion:

Groundwater pollution by nitrates has emerged as a serious problem and challenge facing the whole world. The quality of ground water is severely threatened by the presence of nitrates in groundwater. Indiscriminate exploitation of water and chemicals used in agricultural practice have made humans crave every drop of pure potable water, as well as increasing the environmental degradation of ecosystems and increasing the negative consequences on human health has played a special role. Nitrate contaminated groundwater that has taken the form of poison can be recovered to some extent by its proper management. With the cooperation of common people and administration with understanding and, all the negative effects of polluted groundwater can be reduced. However, in order to better and appropriately manage and limit nitrate contamination in groundwater systems, researchers, water resource experts and policy makers working in this field should be informed about the extent of groundwater nitrate contamination and its distribution across India. Being available is the primary function. Despite all this, this is the only way to make nitrate-contaminated water drinkable and usable, new technology, research and research should be done to find out various techniques, which will purify the nitrate-rich groundwater and re-use the poisoned groundwater as nectar.

- Sh. Pawan Kumar
Assistant Professor of Geography
Govt. College Birohar (Jhajjar)
Haryana Pawank.pu@gmail.com
Contact .9891800340

References:

1. fam, fadah. Hal , 1751. 37*ft. 111. (2022) fagyi 5137 [3721 ,7.31

2. THE ATË (ofisicomyoft) Fa gift HEIGA, FIAT HTETA, tai fac sit IT HATUT faur http://cgwb.gov.in/

3. Zhou, Zhao (2015), A Global Assessment of Nitrate Contamination in Groundwater Page 9

4. Nitrate Contamination, https://www.watereducation.org/aquapedia/nitratecontamination#:_text=Nitrate%20contamination%20occurs%20in%2

5. Predicting Regional-Scale Elevated Groundwater Nitrate Contamination Risk Using Machine Learning on Natural and Human-Induced Factors https://pubs.acs.org/doi/abs/10.1021/acsestengg. 1c00360

6. Zhou, Zhao (2015), A Global Assessment of Nitrate Contamination in Groundwater Page.9

7. Same Page. 4

8- रिवर्स ऑस्मोसिस https://www-mpgkpdf-com/2020/09/What%20is%20reverse%20osmosis%20-html

9 कुमार, दिनेश. साह, तुषार. भारत में भूजल प्रदूषण और दूषितकरण उभरती चुनौती पृ. 4

KEY CHARACTERISTICS OF TOP CLASS JUDOKAS

- Mr. Shubham Pal

Abstract

In this piece of research work the scholar tried to find out some responsible variables which affects the Judo performance most. Seventy five male Judokas (N=75) of age 18-25 years took part in this study voluntarily. They were tested on some of the physical fitness and anthropometric variables, their performance was recorded using standard protocol. The collected data was first cleaned using outlier detection facility of SPSS. Factor analysis statistical technique was made utilised to short list the most important variables. Level of significance was set at 0.05 for statistical operations. The results of the study suggests that 71.5% of total variability can be explained by two factors (physical fitness & Anthropometric tests) which includes 6 variables only. The name of the variables are bench press (r=.825) sitting height (r=.822), grip strength (i=.821), chest circumference (r=.803), back strength (r=.797), stature height (r= 790). The names mentioned above have been presented in descending order.

Key words : Judo, Factor analysis, Physical fitness, Anthropometric tests.

Introduction

Assessing sports performance of such sports where performance can't be objectively and quantitatively is perhaps most difficult task for a sports researcher. There are sports like Track and field, & swimming in which performance can be measured in absolute numbers for example an athlete takes 2:56:84 minute to complete 1000m race. He/she may be suggested with an intelligently developed strength and conditioning programme and the performance may rechecked after 30-45 days for assuring improvement in performance. Not all sports does have similar criteria for assessment of performance, in most of the cases sports performance is a latent variables which is regulated by various responsible predictor variables. In such cases development of test battery plays an important role for the assessment of sports performance. These test batteries are made up of research based predictor variables related to some known factors be it physical fitness, anthropometric measurements, psychological factors. Norms are developed according to subject's age, gender, & area of specialization.

In the present study an attempt have been made to develop a test battery for the assessment of Judo performance of elite class Judokas. Subjects were chosen by performance based criteria, judokas with performance at national level and above were provided opportunity to be the part of study.

Objectives : To develop a test battery for the assessment of Judo performance.

To extract some important predictor variables which can be used for development of test battery.

Methodology In present study an attempt have been made to develop a test battery for the assessment of Judo performance. Seventy five male Judokas with performance level National and above were chosen as subjects for this study. They all were told about the aim of the study, and later a written consent form was signed by them for registering themselves as volunteers of the study. Subject's performance was measured using scientific reliable equipment's. Their performance was tested on Repeated counter movement jump, bench press, bent over rowing, grip strength. Leg strength, back strength, height, sitting height, leg length, upper arm circumference calf circumference, thigh circumference, chest circumference. Data were cleaned using outlier removal functionality of SPSS. Factor analysis statistical technique was used for the development of test battery for Judokas. To avoid overlapping of variables, Varimax rotation was used for assigning one variable to a unique factor. Level of significance was set 0.05 for all statistical tests.

Results

Table-1

Descriptive Statistics

	Mean	Std. Deviation	N
REPEATED COUNTER MOVEMNET JUMP	21.4133	3.99694	75
BENCH PRESS	103.6667	24.82824	75
BENT OVER ROWING	86.4667	16.14490	75
GRIP STRENGTH	47.4800	5.77122	75
LEG STRENGTH	149.9600	13.45507	75
BACK STRENGTH	138.5067	14.06104	75
HEIGHT	170.6000	5.72099	75
SITTING HEIGHT	88.5467	3.48857	75
LEG LENGTH	85.0000	2.66103	75
UPPER ARM CIRCUMFERENCE	29.2800	3.50505	75
CALF CIRCUMFERENCE	35.9600	2.81617	75
THIGH CIRCUMFERENCE	53.5333	4.43674	75
CHEST CIRCUMFERENCE	94.0933	6.78268	75

Table 1 shows mean and SD of all selected variables. In third column total number of participants have been indicated. Descriptive statistics does not reflect any significant change in the study rather provides general idea of performance characteristic of athletes.

Table-2

KMO and Bartlett's Test

Kaiser-Meyer-Olkin Measure of Sampling Adequacy.		**.886**
	Approx. Chi-Square	1048.058
Bartlett's Test of Sphericity	df	78
	Sig.	**.000**

Table-2 indicates adequacy of sample size (p = .000), which means the selected sample size is enough for conducting factor analysis. According to this test the value of Kaiser test should be more than 0.05 in this case study opted .886 which is greater than 0.05. Thus study fulfils the basic requirement of sample size adequacy.

Table-3

Total Variance Explained

Component	Initial Eigenvalues			Extraction Sums of Squared Loadings			Rotation Sums of Squared Loadings		
	Total	% of Variance	Cumulative %	Total	% of Variance	Cumulative %	Total	% of Variance	Cumulative %
1	8.159	62.761	62.761	8.159	62.761	62.761	5.908	45.445	45.445
2	1.142	8.783	71.545	1.142	8.783	71.545	3.393	26.100	71.545
3	.958	7.369	78.913						
4	.779	5.990	84.904						
5	.487	3.746	88.650						
6	.437	3.364	92.014						
7	.277	2.129	94.142						
8	.256	1.972	96.114						
9	.179	1.380	97.494						
10	.147	1.128	98.623						
11	.124	.955	99.578						
12	.034	.261	99.839						
13	.021	.161	100.000						

Extraction Method: Principal Component Analysis.

Table-3 tells us about total variance explained by all the variable in total and number of factors responsible for extracting significant variance in specific. As per guidelines provided for factor analysis factors with eigenvalues more than 1 should be considered for selection of factor.

Table-4

Rotated Component Matrix

	Component	
	1	2
REPEATED COUNTER MOVEMNET JUMP	-.735	-.545
BENCH PRESS	.825	.251
BENT OVER ROWING	.727	-.063
GRIP STRENGTH	.821	.465
LEG STRENGTH	.741	.516
BACK STRENGTH	.797	.264
HEIGHT	.459	.790
SITTING HEIGHT	.117	.822
LEG LENGTH	.135	.642
UPPER ARM CIRCUMFERENCE	.501	.741
CALF CIRCUMFERENCE	.265	.745
THIGH CIRCUMFERENCE	.557	.519
CHEST CIRCUMFERENCE	.420	.803

Extraction Method: Principal Component Analysis.

Rotation Method: Varimax with Kaiser Normalization.

a. Rotation converged in 3 iterations.

A single variable may appear in more than one factor, to overcome this problem varimax rotation is widely used method for assigning one variable to an exclusive factor. Variable with factor loading more than 7 is considered to be benchmark for a variable to be assigned to a particular factor.

Table-5

Important variables for development of test battery for screening of Judokas

Bench Press	.825
Grip strength	.821
Back strength	.797
Chest circumference	.803
Stature height	.790
Sitting height	.822

The test battery so obtained on the basis of selected physical fitness and anthropometric tests few variables with high prediction capability have been shortlisted in table 5. These variables belongs to one particular factor which have been noticed in table 4.

Conclusions :

1) This study could explain 71.5 variability in judo performance on the basis of selected physical fitness and anthropometric tests.

2) Two factors were identified out of selected number of factors.

   a) The first factor (Physical fitness) accounts for 45.5% variability in Judo performance, and this factor includes 3 variables in total.

   b) The second factor (Anthropometric tests) accounts for 26.1% variability in Judo performance, and this factor includes 3 variables in total.

3) Variables which were found most contributing to least contributing have been listed below in descending order. Bench press> sitting height> Grip strength> chest circumference> back strength > stature Height.

- Mr. Shubham Pal (Research scholar L.N.I.P.E. Gwalior).
- Dr. Vinita Bajpai Mishra (Associate professor L.N.I.P.E. Gwalior)
Mob. 89829 10332

References :

1. Dal Pupo J., Reis D.C., Moro A.R>P., Santos S.G., Borges Jr. N.G., Kinetic parameters as determinants of vertical jump performance. Braz) Kineant Hum Perform, 2012, 14 (1), 4151, doi: 10.5007/1980-0037.2012v14n1p41.
2. Ache Dias J., Wentz M., Külkamp W., Mattos D., Goethel M., Borges Jr. N.G., Is the handgrip strength performance better in judokas than in non-judokas? Sci Sports, 2012, 27 (3), 9–14, doi: 10.1016/j.scispo.2011.10.005.
3. Claessens A., Beunen G., Lefevre J., Mertens G., Wellens R., Body structure, somatotype, and motor fitness of top-class Belgian judoists. In: Day J.A.P. (ed.), Perspectives in Kinanthropometry. Human Kinetics, Champaign 1984, 1.
4. Nicolay C.W., Walker A.N., Grip strength and endurance: influences of anthropometric variation, hand dominance, and gender. International Journal of Ind Ergonom, 2005, 35 (7), 605–618, doi: 10.1016/j.ergon.2005.01.007
5. Arazi H., Noori M., Izadi M. (2017), Correlation of anthropometric and bio-motor attributes with Special Judo Fitness Test in senior male judoka, "Ido Movement for Culture. Journal of Martial Arts Anthropology", vol. 17, no. 4, pp. 19-24; doi: 10.14589/ido.17.4.4.
6. Sertic H., Segedi I., Budinscak M., (2006), Differences in anthropological characteristics between wrestlers and judokas 13 years of age [in:] Z. Borysiuk [ed.], 5th International Conference "Movement and Health" Proceedings Book, Glucholazy, Poland, Nov. 17-18, 2006, pp. 379-387.
7. Sterkowicz-Przybycien K.L., Fukuda D.H. (2014), Establishing normative data for the special judo fitness test in female athletes using systematic review and meta-analysis, "Journal of Strength and Conditioning Research", vol. 28, no. 12, pp. 3585-3593; doi: 10.1519/JSC.561.

देश के सर्वांगीण विकास में धर्म से अधिक महत्वपूर्ण शिक्षा है

— बी. एल. परमार

भारत में विद्यालयों के बजाय मंदिरों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। मंदिरों में लाखों करोड़ों का चंदा और दान आता है। किंतु शासकीय विद्यालय भवन जर्जर हो रहे हैं। महात्मा ज्योतिबा फुले, माता सावित्रीबाई फुले ने देखा कि भारतीय हिन्दू समाज में मनुस्मृति के आदेशानुसार शूद्र और स्त्री को पढ़ने का अधिकार नहीं है। 'स्त्री–शूद्रों विद्या नदियताम' इस आधार पर इन्हें सदियों शिक्षा से वंचित रखा गया। यदि शूद्र और स्त्री पढ़ेंगे–लिखेंगे नहीं तो वे रूढ़िवाद, अंधविश्वास, अन्याय, अत्याचार, अशिक्षा, अज्ञान से कैसे मुक्त होंगे ? फुले दम्पत्ति ने महिला शिक्षा के लिए 1848 में प्रथम पाठशाला पुणे में खोली। दलित महिलाएं पढ़ने लगी। इस स्कूल की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले बनी। मनुवादियों ने स्त्री शिक्षा का घोर विरोध किया। सावित्रीबाई फुले को पढ़ाते समय कई प्रकार की यातना, प्रताड़ता और व्यवधान झेलना पड़े। किंतु वे अपने लक्ष्य से पीछे नहीं हटी। उन्होंने अपना शिक्षा अभियान जारी रखा। आज महिलाएं वरिष्ठ शासकीय पदों से लगाकर राष्ट्रपति जैसे सर्वोच्च पद पर विराजमान है। इसका समस्त श्रेय माता सावित्रीबाई फुले को ही जाता है।

1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। विश्वविद्वान, शिक्षाविद्, बोधिसत्व, ज्ञान के प्रतिक बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर को स्वतंत्र भारत का संविधान लिखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने सभी वर्ग के स्त्री–पुरूषों को बिना भेद–भाव के शिक्षा प्राप्त करने का मौलिक अधिकार प्रदान किया। स्त्री व शूद्रों को सदियों शिक्षा से वंचित रखा गया था। किंतु इस वर्ग के लिए भी बाबा साहेब ने संविधान में विशेष प्रावधान कर शिक्षा के द्वार खोल दिए। जगह–जगह स्कूल व छात्रावास प्रारम्भ किए गए। छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। शिक्षा को मूलअधिकार से जोड़ा गया। अजा, अजजा के लिए विशेष भर्ती अभियान चला कर योग्यता अनुसार सरकारी नौकरी सहजता से उपलब्ध कराई। नौकरी प्राप्त कर बहुजन समाज की आर्थिक, सामाजिक स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। अछूत कहकर जिस वर्ग को दूर बिठा रखा था, वह शिक्षा और नौकरी पाकर समता, स्वतंत्रता, सम्मान का अनुभव करने लगा। बाबा साहेब ने संविधान द्वारा सभी वर्गो को उन्नति करने का समान अवसर प्रदान किया। किसी वर्ग के साथ भेदभाव नही किया। किंतु केन्द्र व राज्य सरकारों ने आर्थिक तंगी का बहाना बना कर शिक्षा का निजीकरण कर दिया। शिक्षा के दायित्व से पीछे हट गए। निजीकरण करने से शिक्षा व्यवसायिक लोगों के हाथ में कैद हो गई। इन्हें शिक्षा से नहीं अपनी आय से सरोकार है। जो दलित वर्ग शिक्षा से वंचित था, निजीकरण करने के कारण पुनः वंचित हो गया है। क्योंकि बहुजन कि आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं है कि वे निजी स्कूलों की भारी भरकम फीस चुका सके। सरकार ने सैकड़ों सरकारी विद्यालय, महाविद्यालय भवन विक्रय कर दिए हैं। शिक्षा के बजट में कटौती कर दी, विषयवार शिक्षक नहीं है, हजारों पद खाली पड़े हैं। सरकारी स्कूलों में सनसाधन के अभाव में पढ़ाई ठीक से नहीं हो रही है। जो शाला भवन हैं वे बरसात में टपकते हैं। कुछ खंडहर बनकर रहकर गए। गांव के स्कूल भवन में लोग पशु बांधने लगे हैं। देखा जाए तो मंदिरों की छते सोने–चांदी की परत से मढ़ी हुई हैं। लाखों की देव प्रतिमाएं लगी हुई हैं। करोड़ों की लागत से और नए मंदिरों का निर्माण किया जा रहा है। वही स्कूल भवन की स्थिति गौशाला से भी बदतर है। देश के शाला भवनों की स्थिति इतनी घटिया है, तो वहां शिक्षा का स्तर कैसा होगा ? अनुमान लगाया जा सकता है। आर्थिक तंगी के कारण सरकारी स्कूलों में अजा, अजजा, पिछड़े वर्ग के छात्र–छात्रा पढ़ते हैं। किंतु नई शिक्षा नीति इस वर्ग को शिक्षा से वंचित करने का बड़ा अभियान है। जहां छात्रों को शिक्षा दी जाना चाहिए थी वहां सामान्य भोजन दिया जा रहा है। विद्यालय को भोजन शाला बना दिया।

विधायक, सांसद, मंत्री, और धनवानों के बच्चे कॉन्वेंट या विदेश में शिक्षा प्राप्त कर उच्चपदों पर आसिन हो जाते हैं। दलित व पिछड़े वर्ग के बच्चे आर्थिक तंगी के कारण आज भी उच्चशिक्षा से वंचित है। जिस देश की शिक्षा नीति में गरीब–अमीर का भेद हो वह राष्ट्र विश्व में अपना मस्तक ऊंचा नहीं रख सकता है।

महात्मा जोतीबा फुले, माता सावित्रीबाई फुले, रामास्वामी पेरियार, समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व, के पक्ष धर बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर, महात्मा गांधी आदि ने शिक्षा पर विशेष बल दिया था। किंतु देश उनकी शिक्षा नीति से भटक गया है। आज शिक्षा सर्वसुलभ न होकर श्रेष्ठी वर्ग तक रह गई है। नव पीढी को विद्यालय की ओर नहीं मंदिर और मदिरालय की ओर ढकेला जा रहा है। नैतिक शिक्षा का पतन हो गया। हजारों वर्षों के सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक संबंधों का ताना–बाना टूट रहा है।

अतः सरकार को शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। शिक्षा से वंचित अजा, अजजा, एवं पिछड़े वर्ग की शिक्षा का उचित प्रबंध होना चाहिए। देश के सर्वांगीण विकास में धर्म से अधिक महत्व पूर्ण शिक्षा है।

13 भार्गव कॉलोनी, नागदा जं.
जिला–उज्जैन म.प्र. पिन–456335
मोबा. 8770607747

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में** व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्पित होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

हम सबसे पहले भारतीय हैं,
और अंत में भी भारतीय हैं,
भारतीय के अलावा और कुछ नहीं।

-बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक पिंकी सत्यप्रेमी ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से
मालवा ग्राफिक्स, 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं
20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार